

RUSSIA WORKSHOP – JULY 2019
Kabir session 2: death-transiency-delusion

J = Jaipur manuscript, 1615-21

S = Jaipur ms number as given in Callewaert's *Millennium Kabir*, followed by # = *Millennium* poem number

J84 - S85#110

नर जाणैं अमर मेरी काया ॥ घर घर वात¹ दुपहरी छाया । टेक ॥
मारग छोरि कुमारग जोवै ॥ आपन मरै और कूं रोवै । १।
कछू ऐक कीया कछू ऐक करणां ॥ धंधा बहुत निहाइति मरणां² ॥ २।
जल उदबद औसा संसारा³ उपजत बिनसत लगै न बारा । ३॥
पांच पांशुरी ऐक सरीरा ॥ किश्र⁴ कवल दल भुवर⁵ कबीरा ॥ ४॥ ८४॥

J87 - S88#114

चलन चलन सब लोग कहत हैं ॥ न जानौ बैकुंठ कहां है ॥ टेक ॥
जौजन ऐक प्रमिति न जानैं ॥ बातनि हीं बैकुंठ बषाणै⁶ ॥ १॥
जब लग है बैकुंठ की आसा ॥ तब लग नहीं हरि के चरण निवासा ॥ २॥
कहैं सुनैं कैसे पतियाइये ॥ जब लग आप तहां नहीं जाइये ॥ ३॥
कहै कबीर ग्रह कहिये काहि ॥ साध संगति बैकुंठ हि⁷ आहि ॥ ४॥

J80 - S81#106

राम थोरे दिनन⁸ कूं का धन करणां ॥ धंधा बहुत निहाइति मरणां ॥ टेक ॥
कोटी धज साह हस्ती बंध राजा ॥ क्रिपण कौ⁹ धन कौणें काजा । १॥
धन कै ग्रवि¹⁰ राम नहीं जाणां । नागा है जम पैं गुदराणां ॥ २॥
कहै कबीर चेतहु रे भाई ॥ हंस गया कछू संगि न जाई ॥ ३॥ ८०॥

¹ J141 द्वार, C70 द्वारि.

² V84, Gop109;44, KG(Gupta) मुगध न चेतै निहचै मरणां; J141 मुगध चेति निहचे मरनां; C70 मुगध न जल चेतै निहचै मरनां.

³ V84/KG(Gupta) जैसा/ज्यूं जल बूंद तैसा संसारा; J141 ज्यूं जल बुंद सकल संसारा; C70 ज्यों अंबुदबुद तैसैं सकल संसारा.

⁴ J141 चरन.

⁵ C70 किस चरन दल भंवर

⁶ In MS 1614 the ending is nasalized (the dot is rather faint). Without final nasalization only MKV S88 and C35 (बषानै); other MSS give the final nasal vowel appropriate for the correct plural form: A96 बषाणैं; V20 बषानैं; J100 बषानैं; Gop25;5 बषाणैं.

⁷ The text offers two possible ways of segmentation: 1. *baikūth-* + *-a₄*; *-hi₅* „[the company of saints] is the very paradise“; 2. *baikūth-* + *-ahi₁* „[in the company of saints one] is in the paradise“.

⁸ KG(Gupta) दिन.

⁹ A89, V80, C67, Gop102;3 कौ, J138 को.

¹⁰ J138 धन के गारे, C67 धन के गरै, Gop102;3 धन के ग्रव.

J35 - S35#43

कौन मरै¹¹ कहु¹² पंडित जणां ॥ सो समझाइ कहौ हम¹³ संना¹⁴ ॥ टेक ॥
मटी माटी रही समाइ ॥ पवनै पवन लीया संगि लाय ॥ १ ॥
कहै कबीर सुनि पंडित गुनी ॥ रूप मुवा सब देखै दुनी ॥ ३¹⁵ ॥ ३५ ॥

J33 - S33#41

हंम न मरै¹⁶ मरिहै¹⁷ संसारा ॥ हंमकुं मिल्या जीवावनहारा ॥ (टेक)
अब नही मंरू मरण मन मान्यां ॥ सोई¹⁸ मुवा जिनि रांम न जान्यां ॥
साकत मरै संतजन जीवै ॥ भरि भरि रांम रसाईन पीवै ॥
हरि मरिहै तौ हंमहुं मरिहै ॥ हरि न मरै हंम काहे कूं मरिहै ॥
कहै काबीर मन मनहि मिलावा ॥ अंमर भये सुष सागर पावा ॥

J45 - S45#57

इव¹⁹ तैं²⁰ हसि²¹ प्रभू मैं कछू नाही ॥ पंडित पढि अभिमान नसाहीं ॥ टेक ॥
मै मै जब लग मै कीन्हां ॥ तब लग मैं करता नहीं चीन्हां ॥ १ ॥
कहै²² कबीर सुनहु नर नाहा ॥ ना हंम जीवत न मूव²³ ले माहा ॥ २ ॥ ४५ ॥

[prepare only to here]

* * * * *

¹¹ V121 कून मूवा, KV-S को न मुवा.

¹² A45 कौण instead of कहु.

¹³ KV-S मोहि

¹⁴ A45 सुनां.

¹⁵ Incorrect number in the ms.

¹⁶ MS3190/S33 and C41 मरै, A43, V36, Gop105;1 and Raj 71;3 मरै which appears to be the correct grammatical form here; J109 मरिहै; AG325;12 मै न मरउ. In MS3190 there may be anusvāra above the sign रै; even on close inspection of the photocopy it is impossible to decide whether it is a separate dot or an ending of the lower part of the letter र on the upper line.

¹⁷ Only S33 मरहै; A43, J109, C41, Gop105;1 and Raj71;3 (correctly) मरिहै; V36 मरिहै. In MS3190 we have मर at the end of the line; the next line begins with a vertical stroke followed immediately by है : है. The form is here interpreted as मरिहै.

¹⁸ MS3190/S33, A43, Raj71;3 सोई with मुवां can be interpreted as sg.; A43 has सोई मूवा; V36 and Gop105;1 have the proper pl. forms तेई मूयै and मुये J109 and C41 read जे मूवा.

¹⁹ V52 अब.

²⁰ तैं omitted on the line, subsequently added above the first line on the top of the page and interpolated at the proper place by insertion marks (*kākapāda*). KG(Gupta) तूं.

²¹ A62 हमि, V52 हरि.

²² A62 कहत.

²³ V52 मूवा.

For your enjoyment: a few more delectable poems on death and delusion.

J82 - S83#108

मेरी मेरी सब जगु²⁴ करते ॥ मोह मछर तनि²⁵ धरिते ॥
आगैं मीर²⁶ मुकादम होते ॥ वैं भी गये यूँ करते ॥ टेक ॥
किस की²⁷ ममा चचा को²⁸ किस का ॥ किस का पुंगरा जोई ॥
ग्रहु संसार बाजार मंड्या है ॥ जाणैगा जन कोई ॥ १ ॥
मैं परदेसी काहि पुकारौं ॥ इहां नही को मोरा ॥
ग्रहु संसार ढूँढि सब देष्या ॥ ऐक भरोसा तेरा²⁹ ॥ २ ॥
षाहि हलाल हरांम निवारैं ॥ भिस्ति तिन्हां कूँ होई ॥
पंच तत का मरम न जानैं ॥ दोजगि परैगा³⁰ सोई ॥ ३ ॥
कुंटेब कारंणि पाप कमावै ॥ तूँ जाणैं घर मेरा ।
ऐ सब मिले आप सवारथि । इहां नही को तेरा ॥ ४ ॥
साइर उतरौ पंथ संवारौ । बुरा न किस का³¹ करंणां ।
कहै कबीर सुनहु रे संतौ जाब षसंम कूँ भरणा ॥ ५ ॥ ८२ ॥

J86 - S87#113

जौ पै रसना राम न कहिबौ ॥ तौ उपजत बिनसत भ्रंमत रहिबौ ॥ टेक
जैसी देषि तरवर की छाया ॥ प्रांन गयें को का कर माया³² ॥ १ ॥
जीवत कछू न कीया परवानां ॥ मुवां मरंम को का कर जानां ॥ २ ॥
कंध काल सुष कोउ न सोवै ॥ राजा रांक दोउ मिलि रोवै³³ ॥ ३ ॥
हंस सरोवर कवल सरीरा ॥ रांम रसाईन पीवै कबीरा ॥ ४ ॥ ८६ ॥

²⁴ KG(Gupta) दुनियां instead of सब जगु.

²⁵ V82 चिति.

²⁶ KG(Gupta) पीर.

²⁷ V82 किस कां.

²⁸ V82 कूण, Gop89;17 पुनि, KG(Gupta) पुनि.

²⁹ In ms. original तेरा corrected to तेरा.

³⁰ KG(Gupta) पडिहै.

³¹ KG(Gupta) किसी का.

³² प्रांन गयें को का कर माया: only in S87 (and A95 प्रांन गये ...). V108 has more comprehensible प्रांण गयें कहू का की माया; similarly AG325;8: प्राण गए कहू कां की माइआ. Gop47;13 does not include this verse, A138 is a different *pad* and with A95 has common only the *teka*. The translation and meaning of the variant in S87 and A95 perhaps is „look, [it is] like the shadow of a tree: after death who [remains], to whom pertains / whose [then] is *māyā*?“ (A tree, while it stands, casts a shadow; once it is cut down, the shadow disappears. Similarly with men: when one dies, his *māyā*, the objects of his sensual perception and enjoyment, wealth etc., the whole world of relationships one projects outside and around himself, also disappears.) Problematic remains the lack of concord in gender of कर and माया, smoothed out in V108 and AG325;8.

³³ A95 has the correct plural form रोवै.

J83 - S84#109

या मै³⁴ क्या मेरा क्या तेरा । लाज न मरतहु³⁵ कहत घर मेरा ॥ टेक
चारि पहर³⁶ निस भेरा³⁷ । जैसे तरवरि पंषि बसेरा ॥ १ ॥³⁸
जैसे³⁹ बनिगैं हाट पसारा । सब जग का सो⁴⁰ सिरजनहारा⁴¹ ॥ २ ॥
ऐ ले जारे वैं ले गाडे ॥ इन दुषियन⁴² दोउं घर छाडे । ३ ।
कहै कबीर सुनहु रे लोई । हंम तुम बिनसि रहैगा सोई⁴³ ॥ ४ ॥ ८३ ॥

J77 – S78#103

देषहु ग्रहु तन जाता है ॥ घरीं⁴⁴ पहर बिलंबौ मेरे⁴⁵ भाई जरता है ॥ टेक ॥
काहे कूं ऐता कीया पसारा ॥ ग्रहु तन जरि बरि ह्वैगा⁴⁶ छारा ॥ १ ।
नव तन द्वादस लागी आगी⁴⁷ ॥ मुग्ध न चेतै दह दिसि लागी⁴⁸ ॥ २ ॥⁴⁹
कहै कबीर हंम अतक समांना राम नांम छूटै अभिमांनां ॥ ३ ॥ ७७ ॥

J72 – S73#96

जीवरा⁵⁰ तूं जाइगौ मैं जानां ॥
जो देष्या सो बहुरि न पेष्वा ॥ माया स्यू लपटानां⁵¹ ॥ टेक ॥
व्याकुल⁵² बस्तर किता पहरिबा ॥ का तप बनषंडि बासा ॥
कहा मुगध रे पाहन पूजै ॥ का जल डारै⁵³ गाता ॥ १ ॥
कहै कबीर सुर मुनि उपदेसा ॥ लोगा पंथि लगाई ॥
सुणौ संत सुमिरौ भगता जन ॥ हरि बिन जनंम गंमाई⁵⁴ ॥ २ ॥

³⁴ Gop89;7 and KG(Gupta) रे यामैं.

³⁵ A92 मरहु, V83 मरत, J140 मरों, C69 मरो, Gop89;7 मरहि, KG(Gupta) मरहि.

³⁶ Gop89;7 पहर.

³⁷ Gop89;7 and KG(Gupta) भोरा.

³⁸ In J140 and C69 this verse is missing.

³⁹ In J140 and C69 जैसे is missing.

⁴⁰ V83, C69 सोई, J140 सेइ.

⁴¹ J140 सीरजाइ.

⁴² J140 दोषे, C69 घोषे, KG(Gupta) इनि दुखि इनि.

⁴³ J140/C69 घर घर करि बुडो/बूडै जिनि कोइ/कोई.

⁴⁴ Interpretation of the dot in the ms. as nasalization sign is uncertain. A86, V77 and KG(Gupta) have घडी, Gop109;43 घडी.

⁴⁵ Gop109;43 and KG(Gupta) रे.

⁴⁶ V77, Gop109;43 and KG(Gupta) ह्वै.

⁴⁷ V77 नव तन दह दिसि जारै आगी ।

⁴⁸ V77 and Gop109;43 मुगध न चेतै नष सिष लागी ॥ KG(Gupta) मुगध न चेतै नष सिष जागी ॥

⁴⁹ After verse 2 Gop109;43 inserts verse काम क्रोध घट भरयौविकारा । आपहि आप जरै संसारा ॥

⁵⁰ A81 जीवरा; V73, Gop13;15 जीयरा; AG338;67 जीअरे.

⁵¹ A81 माया स्यू लपटानां; V73 माटी सूं मन मांनां; Gop13;15 माया सूं मन मांनां; AG338;67 संगि माइआ लपटाना.

⁵² A81 व्याकुल („agitated“, „perturbed“, „restless“); V73 and Gop13;15 बाकुल („bark of tree“); AG338;67 विपल („many“).

⁵³ A81 पूजै – डारै; V73 पूजै – डारै; Gop13;15 पूजै – डारै. The characteristic construction का + instr. sg. of perfective participle with the meaning „what [is gained] by ...“ appears several times with different verbs and different forms of the loc./instr./erg. ending in the present corpus. This fact, together with other MSS readings (nasalized forms, the unmistakable form पूजै in V73) makes the interpretation of these forms as participles preferable to understanding them as finite verbal forms (2nd or 3rd pers. sg. pres.).

⁵⁴ A81 गंमाई; V73 गवाई; Gop13;15 गंवाई; AG338;67 has a different variant of the whole verse.

J75 – S76#101

मन रे तन कागद का पुतरा ॥
लागै बूंद बिनसि जाइ छिन मैं ॥ गरब करहिं का इतरा ॥ टेक ॥
माटी षोदहिं भीति उसारहिं ॥ अंध कहैं घर मेरा ॥
आवै तलब बांधि ले चालै ॥ बहुरि न करिहै फेरा ॥ १ ॥
षोट कपट करि ग्रहु⁵⁵ धन जोर्यौ । ले धरती मैं गाड्यौ ।
रोके द्वार⁵⁶ सास नहीं निकसै⁵⁷ ॥ ठौर ठौर सब छांड्यौ ॥ २ ॥
कहै कबीर नट नाटिक थाके⁵⁸ । मंदला कौण⁵⁹ बजावै ॥
गए⁶⁰ पषनियां उझरी बाजी । को काहु कै आवै ॥ ३ ॥ ७५ ॥

⁵⁵ Gop109;41 करि परि हु.

⁵⁶ J132 रोक्का कंठ, Gop109;1 रोक्का घट्ट, *KG*(Gupta) रोक्कौ घट कि.

⁵⁷ J132 निसरे, Gop109;41 निसरै.

⁵⁸ *MKV* segments नट नाटि कथा के.

⁵⁹ A84 कोई न.

⁶⁰ J132 सो.